विद्यालयी पाठ्यक्रम और संगीत शिक्षा

सुजाता साहा*

प्रायः हर प्रकार की संस्कृति में शिक्षा का आरंभ संगीत से किसी-न-किसी प्रकार जुड़ा होता है। शिशुओं से परिवार के लोग स्वरों के विविध उतार-चढ़ावों के माध्यम से संप्रेषण करते हैं। लोरी, शिशु गीत, पद्यात्मक बाल-कथाएँ ये सभी गेय होते हैं। विभिन्न प्रकार की लयात्मक भाव-भंगिमाओं का भी बाल-शिक्षा में प्रचुर प्रयोग होता है। बच्चों के ध्वन्यात्मक खिलौने संगीत का आधार लेकर ही निर्मित होते हैं।

संगीत शिक्षा का अपना सुविकसित विज्ञान है। उसके अनेक सकारात्मक पक्ष हैं। सामान्य शिक्षा में आवश्यकतानुसार उनके और बेहतर समावेश की आवश्यकता है। इस लेख में पाठ्यचर्या में संगीत शिक्षा के बहुउपयोगी आयामों का विश्लेषण किया गया है।

आदिकाल से संगीत आनंद सहित विभिन्न मानवीय भावों की अभिव्यक्ति का प्रचलित और सशक्त माध्यम रहा है। अध्यात्म एवं सौंदर्य-बोध से इसका जुड़ाव भी अत्यंत प्राचीन है। सामवेद, ब्राह्मण संहिता, गांधर्ववेद, प्रति शाख्य, नारदीय शिक्षा, छान्दोग्य उपनिषद, नाट्यशास्त्र, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, संगीत रत्नाकर आदि इसी चिंतनधारा के पोषक हैं। संगीत मानव मन और मस्तिष्क को शांति तथा नवीन स्फूर्ति से पूर्ण कर देने में प्रभावी रूप से सक्षम है। संगीत (गायन एवं वादन) के अनेक रूप हैं। क्लिष्ट हिन्दुस्तानी शास्त्रीय शैलियों में ध्रुपद, धमार, खयाल एवं गतों के विभिन्न प्रकार आते हैं तो दूसरी ओर इसके तुलनात्मक रूप से अधिक लोकप्रिय एवं सरलतर प्रकारों में उपशास्त्रीय संगीत, सुगम या भाव संगीत, लोक संगीत एवं फिल्म संगीत प्रमुख हैं।

सामान्य शिक्षा और संगीत

गायन, वादन तथा नृत्य का व्यक्तिगत अथवा सामूहिक प्रयोग ही संगीत है। बालक की सीखने

* *रीडर*, शिक्षा विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, के.एफ.आई., राजघाट फोर्ट, वाराणसी, पिन-221001 (उ.प्र.)।

की प्रक्रिया को रोचक बनाने के लिए अनिवार्यत: संगीत का प्रयोग किया जाता है, भले ही हम इस प्रयोग के प्रति जागरूक न हों। दार्शनिक प्लेटो का कथन है—

'मैं उस व्यक्ति को कभी किसी पाठशाला में शिक्षक नही बनाऊँगा, जो संगीत की जानकारी न रखता हो।'

वस्तुत: संगीत सिखाई जाने वाली विषय-वस्तु के प्रति बालक की चंचल प्रवृत्ति को एकाग्र करने में अत्यधिक सहायक है। बालक प्रारंभ में अनुकरण द्वारा सीखता है। सांगीतिक शिक्षा भी अनुकरण की अपेक्षा करती है। नन्हे विद्यार्थी को संगीतमय विषयवस्तु नीरस और ऊबाऊ प्रतीत नहीं होती।

सामान्य शिक्षा में संगीत शिक्षा के इन सकारात्मक पक्षों को आवश्कतानुसार संयुक्त कर लाभ उठाया जा सकता है—

1. सरल सम्प्रत्ययों का शिक्षण

बच्चों को सिखाए जाने वाले प्रारंभिक सम्प्रत्ययों को पद्य में सरल और रोचक बनाकर सिखाने की परंपरा रही है। जैसे, वर्णमाला के अक्षरों से संबद्ध शब्दों के उदाहरण—

अ - अच्छे-अच्छे हैं अमरूद ।
आ - आम खाकर पी लो दूध ।।
अथवा
अ - अजगर अजब जीव होता है। जो भी फँसा जान देता है।।
आ - आम फलों का राजा आया। लोगों ने बाज़ार सजाया।।

ऐसी पद्यात्मक पंक्तियों को सुरों में निबद्ध कर सीखने की प्रक्रिया को रोचक और स्थायी किया जा सकता है। प्रारंभिक कक्षाओं में सिखाई जाने वाली कविताओं के साथ भी ऐसा किया जा सकता है।

2. श्रव्य-दृश्य सामग्रियों में संगीत

छोटे बच्चों के सीखने हेतु उपयोगी ऑडियो एवं वीडियो सी.डी. तथा डी.वी.डी. आजकल बाज़ार में आसानी से उपलब्ध हैं। इन सबमें तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के शैक्षिक कार्यक्रमों में संगीत का अनिवार्यत: प्रयोग होता है। बच्चे संगीतमय ध्वनि के प्रभाव से दृश्य को प्रसन्नतापूर्वक देखकर सीखते हैं। गणित के 'एक' और 'अनेक' के सम्प्रत्यय के साथ एकत्व भाव को दूरदर्शन की प्रस्तुति—'एक चिड़िया, अनेक चिड़िया' व 'हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं, रंग-रूप वेश-भाषा चाहे अनेक हैं'— के द्वारा अत्यंत सुंदर और सुग्राह्य रूप से समझाया गया है।

3. सटीक अनुकरण की क्षमता का विकास

संगीत शिक्षा सर्वप्रथम अनुकरण की अपेक्षा रखती है। शिक्षक द्वारा गाए या बजाए गए स्वरों को शिक्षार्थी द्वारा हू-ब-हू अनुकरण का प्रयास अपेक्षित होता है। छोटे बालक भी अनुकरण द्वारा ही सीखते हैं। संगीत से जुड़ी शिक्षा के अंतर्गत विद्यार्थी अपने अनुकरण की त्रुटियों, जैसे, उच्चारण-दोष, स्वरों के उतार-चढ़ाव इत्यादि को ध्वन्यात्मक रूप में आसानी से समझ सकता है।

4. अभ्यास और धैर्य का महत्त्व

अभ्यास के अभाव में संगीत शिक्षा आगे नहीं बढ़ सकती और बिना धैर्य के लंबा अभ्यास जारी नहीं रह सकता। बच्चों के सीखने में प्रयास और त्रुटि के माध्यम से ही प्रगति होती है। संगीत की शिक्षा भी इसी प्रकार आगे बढ़ती है। विद्यार्थी को विषय का एक नया पहलू सीखने में परिश्रम करना पड़ता है और समय देना पड़ता है। इस दौरान शिक्षक उसका धैर्य बनाए रखने के लिए उत्साहवर्द्धन करता है। अभ्यास और धैर्य किसी विषय में दक्षता के लिए अनिवार्य है। इनके साथ शिक्षक के सही मार्गदर्शन का संयोग छोटी आयु के भी विद्यार्थी को संगीत की अच्छी समझ प्रदान कर सकता है। संगीत शिक्षा के ये सकारात्मक पक्ष किसी भी विषय की शिक्षा के मूलाधार हैं।

5. एकाग्रता का विकास

ध्वनि के विविध उतार-चढ़ावों एवं गति पर ध्यान केंद्रित किये बिना संगीत के शिक्षार्थी को स्वरों और ताल की समझ प्राप्त नहीं हो सकती। संगीत की सतत् शिक्षा क्रमशः एकाग्रता का विकास करती है। ध्वनि के प्रति संवेदनशीलता इतनी बढ़ जाती है कि एक समय ऐसा आता है, जब त्वरित गति से गाए या बजाए स्वरों को तत्काल पहचान लिया जाता है। एकाग्रता–किसी भी विषय के अध्ययन में अत्यधिक सहायक है।

6. अवधान-विस्तार में वृद्धि

संगीत की शिक्षा प्रारंभ में क्रमशः एक-एक स्वर अथवा छोटे स्वर-समूहों के अलंकारों से आरंभ होती है और विद्यार्थी की समझ के विकास के साथ-साथ यह विभिन्न रागों के जटिल स्वर-विस्तार तक विस्तृत होती जाती है। इस प्रकार विद्यार्थी के अवधान में भी विस्तार होता है और आगे चलकर वह लंबे और कठिन स्वर-संयोजनों को एक ही बार सुनकर यथारूप गाकर या बजाकर दुहरा सकता है। अवधान-विस्तार का अधिक होना शिक्षा के क्षेत्र में एक सकारात्मक गुण है।

7. स्मृति का विकास

एकाग्रता एवं अवधान के विकास के फलस्वरूप संगीत के विद्यार्थी की स्मृति भी प्रखर हो जाती है। प्राचीन काल में जब संगीत की स्वरलिपि पद्धति का विकास नहीं हुआ था तो शिक्षार्थी सुनकर ही अनेक रागों की विविध रचनाओं को अपने स्मृतिकोष में सुरक्षित रखते थे। आज भी संगीत के अच्छे साधकों की स्मृति हमें अचंभित कर देती है। स्मृति–सीखने का आधारस्तंभ है।

8. सृजनात्मकता का अभ्युदय

संगीत की निरंतर साधना का लक्ष्य व्यक्ति की सृजनात्मकता को स्वरों के माध्यम से अभिव्यक्ति देना है। बिना पूर्व योजना के स्वरों का किया गया सर्वथा नवीन और कर्णप्रिय संयोजन श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देता है। रटंत विद्या का संगीत के क्षेत्र में अत्यंत निम्न स्थान है। गुरू अपनी सृजनात्मकता से शिष्य को सूझ प्रदान करता है और उसे सृजन के लिए मुक्त छोड़ देता है। संगीत में नवीन और मौलिक रचनाओं की संभावना का कोई अंत नहीं है और यह सृजनात्मकता का

ही परिणाम है। शिक्षा का एक लक्ष्य सृजनात्मकता का विकास भी है।

9. शांत मन एवं एकांत साधना का महत्त्व

शोर-गुल भरे वातावरण या तनावपूर्ण मन से संगीत साधना नहीं की जा सकती। इसके लिए स्थिर और शांत मन-मस्तिष्क तथा एकांत माहौल की आवश्यकता होती है। किसी भी विषय के अध्ययन में एकाग्रता के लिए तनावपूर्ण मन-मस्तिष्क तथा एकांत वातावरण सर्वोपरि पूर्वावश्यकताएँ हैं।

10. सौंदर्य-बोध का विकास

संगीत की स्वर-रचनाएँ कर्णप्रिय होनी चाहिए। कौन सा स्वर-संयोजन कानों के लिए मधुर होगा, यह तत्काल निर्णीत कर गाया या बजाया जाता है। इस प्रकार, संगीत साधक का सौंदर्य-बोध निरंतर विकसित होता जाता है। सुख-दु:ख के भावों, रसों, विविध ऋतुओं के सौंदर्य इत्यादि की गायन, वादन एवं नृत्य द्वारा अभिव्यक्ति सशक्त सौंदर्य-बोध द्वारा ही हो सकती है। सौंदर्य-बोध का साहित्य एवं ललित कलाओं में भी यथेष्ट महत्त्व है।

11. संगीत द्वारा मूल्य शिक्षा

विविध पद्य रचनाओं, जिनमें मूल्य शिक्षा निहित है उन्हें संगीतबद्ध कर मूल्य शिक्षा को छोटे बच्चों के लिए रोचक बनाया जा सकता है। यहाँ तक कि बड़ों पर भी सुरीले माध्यम से कही बात का प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ, गंगा-प्रदूषण संबंधी पर्यावरण चेतना हेतु लोक धुन में निबद्ध एक भोजपुरी रचना—

'*केहु गंगा के नीर न बिगाड़े ।।*
चोटी से सुनल कइसन आवाज आई
लहरत बा लहर - लहर देत बा दुहाई
ध्यान से सुन, का कहे गुन
केहू एमे गलीज जनि डारे। केहु ...बिगाड़े ।।
भारत माता के अँचरा गंगा की धारा
मनवा ललचे रे देखि के किनारा
अरज एक बा, गरज एक बा
सब मिलि-जुलि के गंगा के सँवारे।
केहु ...बिगाड़े ।।'

आत्मपरिष्कार हेतु एक प्रार्थना—

'भेद-भाव अपने दिल से साफ कर सकें
दोस्तों से भूल हो तो माफ कर सकें
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।
हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें।।'

इस प्रकार मूल्य-शिक्षा को संगीत के माध्यम से और प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने संगीत को (अन्य कलाओं के साथ) विद्यालयी शिक्षा में एकीकृत करने का सुझाव दिया है एवं संगीत शिक्षा के उद्देश्य, विषय-वस्तु एवं शिक्षण विधियों को निम्न प्रकार से प्रस्तावित किया है-

संगीत

उच्च प्राथमिक स्तर

उद्देश्य

- भिन्न स्वरों एवं लय (ताल) के ज्ञान के आधार पर संगीत के प्रति संवेदनशील होना।

- गायन तथा वाद्य संगीत की विभिन्न शैलियों को पहचानना।

विषय-वस्तु तथा विधियाँ

विषय-वस्तु को उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों में संगीत के दोनों रूपों, गायन तथा वादन, के प्रति संवेदनशीलता को विकसित करने के योग्य होना चाहिए। शुद्ध एवं विकृत स्वरों की गहरी समझ एवं ज्ञान तथा कुछ अलंकारों को गाने की योग्यता सिखाई जानी चाहिए। राग आधारित संयोजना बच्चों को सिखाना चाहिए, गायन में छोटा ख्याल (राग) तथा वाद्य संगीत में द्रुत गति इस स्तर पर लाए जा सकते हैं। कर्नाटक संगीत भी शिक्षक विद्यार्थियों की योग्यता एवं उपलब्ध साधन के अनुसार सिखा सकते हैं। सामुदायिक गायन, लोक गायन, देश-भक्ति के गीत एवं भजन भी सिखाए जा सकते हैं। बच्चे अपने घर के सदस्यों से पारंपरिक गायन अथवा वादन सीख सकते हैं, और उन्हें कक्षा या विद्यालय में किसी अवसर पर प्रस्तुत करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी को अपने प्रदर्शन में सुधार और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए अवसर दिया जाना चाहिए, जैसे सामूहिक गायन, वादन (ऑरकेस्ट्रा), युगल गीत, तीन लोगों के साथ के गीत इत्यादि। इसे इस स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा विकसित किया जाना चाहिए।

संगीत शिक्षा को अधिक रूढ़िवादी ढंग से न देते हुए नए मौलिक तरीकों के लिए भी गुंजाइश रखनी चाहिए। विद्यार्थियों को विभिन्न समकालीन संगीतकारों-गायकों एवं वादकों-के बारे में बताना चाहिए। विभिन्न प्रकार की गतिविधियों एवं परियोजना कार्यों के माध्यम से उन्हें संगीतकारों के चित्र, उनकी जीविका, गायन अथवा वादन शैली इत्यादि के बारे में सूचना एकत्रित करने के लिए कहना चाहिए और उन्हें कक्षा में प्रदर्शित किया जाना चाहिए। स्थानीय समुदाय/क्षेत्र के संगीतकारों को इस स्तर पर विद्यार्थियों को सिखाने की संभावना की खोज करनी चाहिए। श्रव्य-दृश्य साधनों के माध्यम से शिक्षक उन्हें यथासंभव शास्त्रीय गायन एवं वाद्य संगीत को सुनाने अथवा दिखाने का प्रबंध कर सकते हैं।

माध्यमिक स्तर

संगीत से विद्यार्थियों पर न केवल पाठ्यचर्या का बोझ कम होगा बल्कि उनके मन में चल रहे द्वंद्वों को भी कम करने में सहायता मिलेगी, साथ ही उनके भीतर की भावनाओं को भी बाहर निकलने का मौका मिलेगा। संगीत की सहायता से सृजनात्मक अभिव्यक्ति द्वारा उनमें उन्नत सौंदर्यबोध विकसित होने के कारण विद्यार्थी को भावनात्मक संतुलन एवं सामंजस्य स्थापित करने में सहायता मिलती है। इस स्तर पर विषय एक विधा का स्वरूप ले लेता है जिसे उच्च शिक्षा के स्तर पर भी जारी रखा जा सकता है। यह एक निर्णायक घड़ी है जहाँ स्कूली शिक्षा को उच्च शिक्षा से जोड़ा जाता है। इस स्तर पर संगीत की शिक्षा को महाविद्यालय की शिक्षा के साथ भी जोड़ा जाना चाहिए।

इस स्तर पर विद्यार्थियों के लिए विषय के सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक दोनों ही भाग समान रूप

से महत्वपूर्ण हैं। उनमें शास्त्रीय संगीत के ऐतिहासिक पहलू को भी विकसित करने की जरूरत है। विषय के सैद्धांतिक भाग में विद्यार्थियों को इस योग्य होना चाहिए कि वे विभिन्न रागों और स्वरों को स्पष्ट समझ से परिभाषित कर सकें।

विषय-वस्तु एवं विधियाँ

इस स्तर पर ताल, स्वर, आदि के माध्यम से विद्यार्थियों में शास्त्रीय संगीत के विभिन्न पहलुओं के प्रति मूल भाव जागृत करना चाहिए। इस स्तर पर रागों एवं उसके स्वरों की विशेषताओं के आधार पर विद्यार्थियों में विभिन्न रागों एवं स्वरों को पहचानने की क्षमता का विकास होना चाहिए।

उच्चतर माध्यमिक स्तर

विषय एवं प्रणाली

गायन : संगीत के वाद्य (सितार, सरोद, गिटार, वायलिन, बाँसुरी इत्यादि)

सिद्धांत : श्रुति, स्वर

- स्वरलिपि की काम करने लायक जानकारी
- सांगीतिक वाद्यों का वर्गीकरण
- संगीतकारों का योगदान और उनकी आत्मकथाएँ
- परियोजना कार्य

निष्कर्ष

इस प्रकार संगीत शिक्षा के अनेक सकारात्मक पक्ष हैं, जिन्हें सामान्य शिक्षा में नियोजित रूप से सम्मिलित कर हम बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं विशेषकर, सामान्य शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर संगीत के योगदान से हम सभी भली-भाँति अवगत हैं। इस योगदान को और प्रभावपूर्ण बनाने हेतु संगीत शिक्षकों का सक्रिय प्रयास अपेक्षित है। माथुर (2009) ने माना है "...प्रारंभिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को संगीतिक धुनों में बदलना और सिखाना शिक्षाविदों के लिए टेढ़ी खीर है, पर जब खीर बनेगी तो अवश्य ही स्वादिष्ट होगी।" शिक्षा के अन्य स्तरों पर भी संगीत को पाठ्यक्रम और विद्यार्थी की आवश्यकतानुसार संयुक्त कर सीखने और हृदयंगम करने की प्रक्रिया को प्रभावी किया जा सकता है।

संदर्भ

गर्ग, लक्ष्मीनारायण, 1978, *निबंध संगीत,* संगीत कार्यालय, हाथरस।

परांजपे, शरच्चंद्र श्रीधर, 1969, *भारतीय संगीत का इतिहास,* चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी।

माथुर, कविता, 2009, *बालक के सर्वांगीण विकास में संगीत की भूमिका,* संगीत कार्यालय, हाथरस, मई 2009।